गुजरात पत्रिका

दिनांक : **14** *जुलाई,* **2008**

संपादिका : विद्या पसारी

विश्व संवाद केन्द्र – गुजरात

2, मयुर चेम्बर्स, गांधीग्राम रेलवे स्टेशन के सामने, अहमदाबाद - 380 009.

फोन : (079) 26579301, फेक्स : (079) 26579220

E-mail : vskguj@icenet.co.in, info@vskgujarat.com

Website : www.vskgujarat.com

(1) 'गिर गाय ग्रंथ' का विमोचन राज्यपालश्री के हाथ

जूनागढ जिले का छोटा सा 'जामका' गाँव एक ऐसा आदर्श गाँव है जहाँ 'जलसंग्रह' का अनौखा जल अभियान, 'गिर गाय' संवर्धन और सजीव खेती का त्रिवेणी संगम है। इस गाँव ने पूरे देश को एक नई राह दिखाई है। यह उपलब्धि है जलक्रान्ति ट्रस्ट एवम् उसके ट्रस्टी श्री मनसुखभाई सुवागिया की मेहनत की। गिर गाय संवर्धन की प्रवृत्ति ने आज 'वटवृक्ष' का रूप धारण किया है।

श्री मनसुखभाई सुवागिया ने अपनी किताब 'गिर गाय ग्रंथ' में गिर गाय के अनेक पहलुओं की महत्त्वपूर्ण जानकारी है। इस ग्रंथ के लोकार्पण के समय गुजरात के राज्यपाल श्री नवलकिशोर शर्मा ने इस ग्रंथ की सराहना करते हुए कहा "गाय हमारी कृषि का आधार है।" कृषि एवम् किसानों के स्वावलंबन हेतु गाय आधारित खेती जरूरी है। जलसंचय और सजीव खेती आज के समय की उचित माँग है। गाय की रक्षा के लिए आंदोलन की नहीं, जन अभियान की जरूरत है। मानवसमाज के लिए गाय कई तरह से उपयोगी है। गाय का दूध, घी, गोबर, मूत्र हर चीज मानवसमाज के लिए अत्यावश्यक है। गाय आधारित खेती कृषि जगत में क्रान्ति ला सकती है। गिर गाय संवर्धन अति जरूरी है। उनका कहना है पशुपालकों के लिए भी यह ग्रंथ अत्यंत प्रेरणादाई बनकर रहेगा। राज्यपालश्री ने कहा कि राज्य के चारों कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतिओं को इस किताब की कृषि क्षेत्र में, शिक्षा में उपयोगिता के बारे में सोचना चाहिए। इस बारे में विचार-विमर्श जरूरी है।

इस ग्रंथ विमोचन के अवसर पर दिल्ली से खास उपस्थित आई.सी.ए.आर. के वैज्ञानिक डॉ. बी. एस. कालरा ने कहा इस ट्रस्ट ने एक नई दृष्टि, नई दिशा दी है। जूनागढ कृषि – विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. बी. के. ठीकाणी कहते हैं ब्राजील जैसा देश गिर गाय संवर्धन द्वारा समृद्ध हो सकता है तो अपना देश क्यों नहीं ? इस क्रान्ति के बगैर हमारे देश के गाँवों का उद्धार नहीं हो सकता है।

श्री मनसुखभाई का कहना है कृषि स्वावलंबन के चिंतन के पश्चात् ऐसा लगा कि जलसंचय सजीव खेती और गायों के संवर्धन की अति आवश्यकता है। और इस ट्रस्ट का यही उद्देश्य है गुजरात के गाँव गाँव में क्रान्ति लानी है। उनका संकल्प देशभर में गौ-संस्कृति के जतन का है। इस ध्येय के साथ आनेवाले दस वर्षों में दस लाख गिर गायों के संवर्धन का लक्ष्य है।

जामका गाँव ने सरकार की सहायता के बिना केवल लोक भागीदारी और श्रमदान से – ९० लाख रु. के खर्च से ५१ चेकडॅम का निर्माण कर भूगर्भजल के स्तर को उँचा लाने में मदद की है। यह गाँव हर महिने ३०० कि.ग्रा. घी बेचता है।

गुजरात का हर एक गाँव 'जामका' बने।

(2) 'विद्याभारती' संचालित देश की प्रथम आवासीय बालिका विद्यालय

पंचमहाल जिले के गोधरा में विद्याभारती, अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध और विद्याभारती गुजरात संलग्न तथा जनहित उत्कर्ष समिति गोधरा संचालित देश की प्रथम आवासीय बालिका विद्यालय

''श्री मैत्रेयी गुरुकुलम्'' बालिका शिक्षा प्रकल्प का उद्‌घाटन बाल कल्याणमंत्री श्रीमती मायाबहन कोडनानी के हाथों संपन्न हुआ ।

मायाबहन ने कहा यह शिक्षा प्रकल्प शिक्षा के साथ आत्मगौरव, राष्ट्र सम्मान और अध्यात्मिक सम्मान प्राप्त हो ऐसे बहुविध संस्कारों की उपयुक्त योजना है । व्यक्ति का मानसिक शारीरिक एवम् अध्यात्मिक विकास हो तभी व्यक्ति विकसित माना जाता है और तभी समाज भी विकसित होता है ।

अखिल भारतीय शिशु वाटिका की प्रमुख श्रीमती आशाबहन थानकी ने अपने वक्तव्य में प्रश्न उठाया ''स्त्री का महत्त्व क्यों है ?'' जबकि समाज रचना के दोनों समान पहिये हैं । इस प्रकल्प द्वारा भारतीय संस्कृति का पोषण हो और सुसंस्कारों का सिंचन हो ऐसी आशा अभिव्यक्त की ।

(3) कृषिरथ का कमाल

गुजरात में गत तीन सालों से, अक्षयतृतीया से शुरू होकर एक माह तक 'कृषि महोत्सव' आयोजित किया जाता है । राज्य के १८ हजार गाँवों में सरकार के १८ विभाग के करीब १ लाख कर्मचारी, आणंद, नवसारी, जूनागढ और दांतीवाडा कृषि विश्वविद्यालय के ८५० कृषि वैज्ञानिक, मुख्यमंत्री और मंत्रीमंडल के उनके साथी और जनप्रतिनिधि भी मई माह की तपती धूप में गाँव गाँव में नहीं बल्कि खेत-खेत में घूमकर किसानों को सहायक होते रहे हैं ।

बात है कृषिरथ के अन्तर्गत गुजरात ने कृषिक्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति की है उसकी । विश्व में कहीं ऐसा दिखाई नहीं दिया कि १ लाख मानवशक्ति संगठित रूप में नवविकास के काम में रूबरू हो रही है । भारत सरकार के कुल घरेलू उत्पादन में कृषि और कृषिसंलग्न बाबतों का हिस्सा २२.९ प्रतिशत था जो वर्ष २००७-२००८ में घटकर १६.५ प्रतिशत हो गया है । गुजरात राज्य के कुल घरेलू उत्पादन में यह हिस्सा १९९९-२००० में १४.५४ प्रतिशत से बढ़कर २००७-०८ में १६.७७ प्रतिशत हो गया है । राज्य में बुआई विस्तार ७८ लाख हेक्टर से बढ़कर ८९ लाख हेक्टर हो गया है । राज्य में २००२-०३ में कपास का कुल उत्पादन १८.८४ लाख गाँठ था जो २००७-०८ में १ करोड २३ लाख गांठ हो गया है । गुजरात राज्य द्वारा सभी को बीमारक्षण दिया गया है ।

गुजरात में कृषिक्षेत्र में हरियाली क्रान्ति हुई है । राज्य की कुल कृषि आमदनी जो गत वर्षों में ९००० करोड़ थी वह बढ़कर ३४००० करोड़ तक पहुँच गई है । २००४ में सरकार और जनभागीदारी से ४५००० जितने छोटे बड़े चेकडेम बनाये गये । १ लाख जितनी खेत तलावडियाँ बनाकर अद्‌भूत 'जलक्रान्ति' की गई है ।

सरकार की ओर से आयोजित कृषि महोत्सव का महत्त्व का आयम यह है कि किसान के उत्पादन खर्च (लागत) में अभूतपूर्व कमी आई है और उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है । परंपरागत खेती को छोड़कर वैज्ञानिक खेती को अपनाकर गुणवत्ता युक्त और विपुल उत्पादन हो रहा है । देश के कोटन डेवलपमेन्ट ओर रिसर्च सेन्टर ने भी गुजरात की कृषिक्रान्ति की तारीफों के पुल बाँधे हैं । गुजरात की सिद्धिओं ने कृषिक्षेत्र में गुजरात को समग्र देश में पहली पंक्ति में लाकर खड़ा किया है । वर्तमान वर्ष में गेहूँ उत्पादन की बढ़ोतरी है ।

कृषिमहोत्सव के असरकारक परिणामों से गुजरात का किसान ऊँचा उठ रहा है । कृषिरथ हर गाँव हर खेत में जाकर अनाज, फल की बागायत फूलों की बागबानी कैसे बढ़ाई जाती है उसकी प्रायोगिक श्रेष्ठ जानकारी देता है ।

(4) भाभर गाँव में गाय के लिए सेवायज्ञ

बीमार, केन्सरग्रस्त अशक्त गायों को इकट्ठा कर उनकी देखभाल, सेवा का अनौखा यज्ञ किया है बनासकांठा के भाभर गाँव के लोगों ने । भाभर गाँव में ११ एकड़ जमीन गायों की देखभाल के लिए ही ली है । इस जगह में बीमारी के अनुसार वार्ड बनाए गए हैं । अशक्त, अंध, बीमार, केंन्सरग्रस्त गायों को अलग अलग विभाग में रखा जाता है । तद्उपरांत शस्त्रक्रिया, एक्स-रे, आई.सी.यु. विभाग भी बनाए गए हैं ।

अन्य स्थानों से गायों को लाने के लिए विशेष ॲम्ब्युलन्स ऑफ ट्रॅक्टर की व्यवस्था भी की गई है । इस गौशाला के बारे में धीरज भाई कहते हैं गाय हमारी माता है, गाय को बूढी या अशक्त होने पर छोड देना गलत है ।

गाय की दवा, देखभाल के लिए चिकित्सकों का एक दल भी है जो हर समय गाय की सेवा के लिए तत्पर रहती है । गायों के लिए नारियल गुड का मिश्रण, सूखी हरी घास तैयार ही रहता है । एक गाय के पीछे करीब ११,००० रु. का खर्च होता है ।

यह प्रवृत्ति गत् छ वर्षो से शुरू है । करीब १८०० गायें इस गौशाला में हैं । गाँव के लोग 'गायमाता' के लिए अपने तन-मन-धन से पूरा सहयोग देते हैं ।

(5) गाँधीनगर के युवक की साहस यात्रा

गाँधीनगर के युवा साहसिक, प्रकृति प्रेमी और फोटो जर्नालिस्ट आलोक ब्रह्मभट्ट रॉयल एनफिल्ड द्वारा आयोजित १६ दिन की सबसे कठीन हिमालयन महासाहस यात्रा में भाग लेने गये हैं ।

विश्व के सबसे ऊँचे मोटर मार्ग खरदों - लेह की यात्रा के लिए दिल्ली से मोटरसाइकिल पर निकले । ५५०० मीटर की ऊँचाई पर खरदोंग लेह पर वे पहुँचेंगे । १२ जुलाई को यह यात्रा दिल्ली में पूरी होगी ।

(6) कर्णावती में 1857 के विप्लव का उद्भवस्थान : विठ्ठल मंदिर

१८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य समर का शंखनाद जब सारे देश में गूँज रहा था तब कर्णावती (अहमदाबाद) के सारंगपुर स्थित विठ्ठल मंदिर के महंत नारायण लक्ष्मीराम व्यास भी इस समर में कूद पडे । श्री व्यास जिन्हें नारायण स्वामी के नाम से जाना जाता था, ने मंदिर में कई गुप्त बैठकों का आयोजन कर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल फूँका । १८६३ से १८६५ के बीच उन्होंने स्वातंत्र्यवीर राव साहब पेशवा को आश्रय दिया। सशस्त्र सैनिकों के दस्ते का नेतृत्व कर रहे नारायण स्वामी को अंततः गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें १४ वर्ष के कारावास की सजा दी गई ।

विठ्ठल मंदिर के पूजागृह में एक स्थान पर छिपाई हुई एक जर्जरित पट्टिका श्री नारायण स्वामी की सातवीं पीढ़ी के वंशज श्री कश्यपभाई के ध्यान में आई । खाड़िया इतिहास समिति के आसुतोष भट्ट और भो. जे. विद्यालय की डॉ. भारतीबहन शेलत ने इस पट्टिका का अध्ययन किया और बताया कि इस मंदिर की स्थापना संवत् १८३३ (सन् १७७७) में आज से २३१ वर्ष पूर्व हुई थी । स्थापना की तारीख आषाड़, शुक्लपक्ष ६ दर्शाई गई है । गत मंगलवार को मंदिर का २३१ वां स्थापना दिन धूमधाम से मनाया गया ।

★ ★ ★